माध्यम से रेट्नेल के मानव भूगोल ग्रन्थ के प्रथम खंड में प्रतिपाति भौगोलिक दर्शन और अध्ययन पद्धति का व्यापक प्रचार किया। अपनी उत्कृष्ट साहित्यिक भाषा और रोचक लेखन शैली तथा विद्वता से उन्होंने समकालीन पीढ़ी में भूगोल के अध्ययन के प्रति नया उत्साह जगाया। परिणामस्वरूप आगामी कई वर्षों तक अमेरिकी भूगोल मानव प्रगति में प्राकृतिक कारकों की खोज पर केन्द्रित रहा। इनकी अध्ययन पद्धति तुलनात्मक रही। उनके अनुसार पृथ्वी तल पर मनुष्य के जीवन के सभी पक्ष उसके पर्यावास के प्राकृतिक वातावरण के परिणाम हैं। वे प्रसिद्ध जर्मन भूगोलवेत्ता रेटजेल की शिष्या व निश्चयवाद environmental deteminism) की समर्थक रही।

8.2 सेम्पल की जीवनी (Life History of Semple)

एलेन चर्चिल सेम्पल का जन्म 8 जनवरी 1863 में लुडसविले, केंटकी (Louisville, Kentucky) राज्य ने एक सामान्य कृषक अलेक्जेंडर बोनर सेम्पल और ऐमेराइन प्राइस (Alexander Bonner Semple and Exercise Price) के यहाँ हुआ। माँ की प्रेरणा से सेम्पल बचपन से ही इतिहास और भ्रमण-यात्राओं की पुस्तकों को पढ़ती रही। शुरू में उन्होंने लुइसविले के ही प्राइवेट ओर पब्लिक स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। 16 वर्ष की उम्र में उन्होंने Poughkeeprie, न्यूयार्क के कॉलेज में दाखिला किया। 19 वर्ष में उन्होंने वसार कॉलेज (Vassar College) से स्नातक की डिग्री इतिहास विषय में ली, जो (1882 में) उस समय की सबसे कम उम्र की स्नातक थी।

वहाँ से लुइसविले लौटने पर उन्होंने एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाना शुरू किया तथा स्थानीय लुइसविले सोसायटी की सक्रिय सदस्य भी बन गई। 1887 में वे अपनी माँ के साथ लंदन गई, जहाँ दूरेन वार्ड (Duren Ward) नामक व्यक्ति ने उन्हें रेटजेल की पुस्तक Anthropogeographic दी और उनके बारे में बताया। उस पुस्तक के अध्ययन से सेम्पल इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने लिपजिंग में रेटजेल के मार्गदर्शन में पढ़ने का निर्णय लिया। उस समय स्त्रियों को विशेष अनुमति के तहत ही जर्मन विश्वविद्यालयों में पढ़ने का मौका मिलता था। सेम्पल रेट्जेल से मिली तथा उनके व्याख्यानों में उपस्थिति के लिए अनुमति ली, जहाँ 500 पुरुषों में वे एक अकेली छात्रा (महिला) थी। 1892 तक वे लिपजिंग में रही तथा फिर 1895 में लौटी व रेटजल की शिष्यता के अंतर्गत भूगोल की विशिष्ट शिक्षा प्राप्त की। उन पर रेटजेल के नियतिवादी चिंतन का प्रभाव जीवन भर बना रहा। लेकिन विश्वविद्यालय में दाखिला न मिलने के कारण उन्हें इसकी कोई डिग्री नहीं मिल पाई।

यद्यपि वे इस समय तक जर्मनी के भूगोलवेत्ताओं के मध्य एक जाना-पहचाना नाम रहीं, पर अमेरिकन भूगोल में वे लगभग अनजानी रहीं। इसलिए जब वे अमेरिका लौटी तो उन्होंने शोध कार्य, पुस्तकें लिखना, लेख प्रकाशित करवाने शुरू किए, जिससे वे अमेरिकन भूगोल में भी एक महत्त्वपूर्ण नाम बन गईं। केंटुकी उच्च भूमि के लोगों पर उनके क्षेत्र-कार्य और शोध ने उन्हें एक शुद्ध भूगोलवेत्ता के रूप में स्थापित कर दिया। लगभग एक वर्ष तक उन्होंने अपने गृह राज्य के पर्वतों का भ्रमण किया तथा ऐसे समुदाय की खोज की, जो वहाँ बसने के बादसे उस समय तक जरा भी नहीं बदला था। इस पर उनका लेख 1901 में "The Anglo-Saxons of the Kentucky Mountains, a Study in Anthropogeography" के नाम से ज्योग्राफिकल जर्नल में प्रकाशित हुआ। उस समय लोगों को रेटजेल के विचारों में बहुत रूचि थी जिसके कारण रेटजेल ने सेम्पल को अंग्रेजी भाषी लोगों के मध्य अपने विचारों को स्पष्ट करने व प्रसारित करने के लिए कहा। किंतु सेम्पल उनके Organic State के विचारों से सहमत नहीं थी और उन्होंने

रेटजेल के विचारों पर आधारित अपनी पुस्तक 1903 में "American History and Its Geographic Conditions" प्रकाशित करवाई, जिसने बहुत प्रसिद्धि पाई।

उनकी नियुक्ति सर्वप्रथम क्लार्क विश्वविद्यालय में हुई (1897 में), जहाँ उन्होंने भूगोल विभाग की स्थापना की। कुछ समय बाद इसे त्यागा व कई लेख लिखें और थोड़े-थोड़े समय के लिए कई अमेरिकी विश्वविद्यालयों में अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। ये पुनः 1921 में क्लार्क विश्वविद्यालय में मानव भूगोल के प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुई, जहाँ पर वह 1928 तक कार्य करती रही। इस समय तक एक मानव भूगोलवेत्ता (Anthropogeographer) के रूप में इनकी ख्याति संपूर्ण भूगोल जगत में फैल चुकी थी। अमेरिका में नियतिवादी परिवेश पर सुव्यवस्थित एवं पूर्ण प्रभावशाली विधि से लिखने वाली ये अग्रणी महिला एवं प्रथम विद्वान मानी जाने लगी।

सेम्पल के अधिकांश लेख American Geographical Society और Geographical Journal (London) में प्रकाशित हुए। इन्हें अपनी विशिष्ट प्रतिभा हेतु American Geographical Society से 1914 में स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ। इनकी मृत्यु 8 मई 1932 में हुई।

8.3 सेम्पल का भूगोल में योगदान (Contribution of Semple in Geography)

8.3.1 सेम्पल की रचनाएँ [Literary Works of Semple]

सेम्पल ने अपने जीवन काल में निम्नलिखित रचनाएँ एवं लेख लिखें–

1. 1896 - Civilization is at Battens an Economic Fact.

2. 1897 - The Influence of the Appalachian Barrier upon Colonical History.

3. 1901 - The Angle - Sexons of the Kentucky Mountains : A study in Anthropogeography.

4. 1903 - American History and its Geographic Conditions.

5. 1911 - Influences of Geographic Environment. On the Basis of Ratzel's System of Anthropogeography. यह ग्रंथ विशिष्ट व प्रसिद्ध है।

6. 1915 - Barrier Boundary of the Mediteranear Basin and Its Northern Breaches as Factors in History.

7. 1831 - The Geography of the Mediterranean Region. Its Relation to Ancient History.

इन सबके अलावा उन्होंने भूमध्य क्षेत्र मेसोपोटामिया, उक्रेन आदि पर भी कई पुस्तकें लिखी।

8.3.2 सेम्पल का भौगोलिक चिंतन [Geographical Thought of Semple]

सेम्पल से पूर्व रिटर, हम्बोल्ड्ट, हैकल, वकल, रेटजेल, मेकाइण्डर आदि ने निश्चयवाद या नियतिवाद का व्यवस्थित विकास अपने अथक प्रयासों द्वारा वैज्ञानिक आधार पर किया। पेश्चल, डेविस और बाद के कुछ अन्य विद्वानों के द्वारा भौतिक भूगोल को ही भूगोल का विषय-वस्तु मानने से उसमें विसंगतियाँ बढ़ने लगीं। फलस्वरूप प्रतिक्रिया में रेटजेल ने भौतिक तत्वों का मानव पर प्रभाव एवं मानव भूगोल और उसकी शाखा राजनैतिक भूगोल की विस्तृत व्याख्या की।

सेम्पल ने रेटजेल के संपर्क में आने पर उनके चिंतन का अनुसरण किया और उसमें स्थान-स्थान पर सुधार भी किया। उन्होंने स्वयं स्वीकारा कि 'मानव के विकास एवं शोध से रेटजेल के सामान्य विश्वासों

में परिवर्तन की आवश्यकता है।' इन दोनों द्वारा मानव भूगोल पर किए गए कार्यों की सीधी प्रतिक्रिया हुई। फ्रांस, ब्रिटेन एवं अमेरिका में भूगोल में मानव के कार्यकलापों को पुनः उसका वास्तविक स्थान मिला।

8.3.2 निश्चयवादी चिंतन [Deterministic View]

सेम्पल कठोर निश्चयवाद की अग्रणी विद्वान मानी जाती है। उन्हें हम परिवेश व्याख्या एवं उसका मानव पर प्रभाव के चिंतन के विकास में 'Modern apostle of environmental determinism' कह सकते हैं। उनके विचार 'भौगोलिक नियंत्रण' की सीमा में सोच-समझ कह सकते हैं। उनके विचार 'भौगोलिक नियंत्रण' की सीमा में सोच-समझ कर एवं वैज्ञानिक आधार पर लिखे गए माने जाते रहे हैं। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'भौगोलिक परिवेश के प्रभाव' (Influence of Geographic Environment) का प्रथम अनुच्छेद ही इस तरह शुरू किया है :

''मानव भूतल की उपज है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वह बसुन्धरा की संतान है, परन्तु वसुन्धरा ने उसे जननी की भाँति पाला है, पोषा है, उसके लिए कार्य निर्धारित किए है, उसके चिंतन को निर्देशित किया है, उसके सम्मख कठिनाईयाँ प्रस्तुत की है जिससे उसमें शारीरिक दृढ़ता आयी एवं बुद्धि कुशाग्र हुई। साथ ही उनके निराकरण हेतु उसके कान में धीरे से संकेत मंत्र भी फूँक दिया। वह (पृथ्वी) उसकी हड्डियों, स्नायुओं, मस्तिष्क एवं आत्मा में व्याप्त है। ढालू एवं पर्वतीय भाग में उसने उसे लोहे जैसी टाँगे दीं, जबकि तटीय भागों में उन्हें कमजोर एवं मृदु बनाया, परन्तु उसके स्थान पर यहाँ उसके (मानव) चौग सीना एवं लंबे हाथ विकसित किए जिससे कि वह भली-भाँति चप्पू (oar) चला सके।

उसने अपने उपर्युक्त ग्रंथ में परिवेश के एक-एक तत्त्व को व्यवस्थित रूप से लेकर एवं प्रमुख सामाजिक एवं मानव विकास के विविध तत्त्वों को लेकर सभी दृष्टियों से उन्हें परिवेश या प्रकृति नियंत्रित बताने का प्रयास किया। लगभग 7.8 दशाब्द पूर्व कही गई उनकी बातें आज भी कई स्थानों पर सत्य प्रतीत होती है। धर्म के विविध रूपी विकास एवं एकेश्वर तथा द्वैतवादी चिंतन की पृष्ठभूमि में भी उन्होंने परिवेश को ही कारक माना। पश्चिमी एशिया में विकसित तीनों एकेश्वरवादी धर्मों (यहूदी, ईसाई एवं मुसलमान) को उन्होंने इसी पृष्ठभूमि से समझाया।

पर्वतीय प्रदेशों में परिवेश के प्रभाव को समझाते हुए उन्होंने यह विश्वास प्रकट किया कि पर्वतों के निवासी रूढ़िवादी होते है, क्योंकि वहाँ बाहरी परिवेश का प्रभाव नगण्य रहता है। अतः सभी नवीनताों का वह विरोधी रहता है [Hence innovation is repugent to him)। दूसरी ओर मैदानवासी चपल और उत्साही होते हैं। तटवर्ती प्रदेशों के निवासी विश्व के विभिन्न प्रदेशवासियों से संपर्क में आने के कारण ध र्मांध या रूढ़िवादी नहीं होते।

उन्होंने परिवेश के तत्त्वों एवं उनके प्रभाव समझाने में जलवायु को विशेष स्थान दिया है। मानव की आदतों, व्यवहार एवं स्वभाव का मुख्य कारण उन्होंने जलवायु माना तथा प्रजाति (race) विकास में जलवायु को सबसे महत्त्वपूर्ण बताया। सेम्पल ने तो 'मानव को प्रकृति के सामने मात्र मोम या प्लास्टिक का पुतला माना जिसे कि वह (प्रकृति) इच्छानुसार ढालती है।'' परन्तु अपने अंतिम दो-तीन अध्यायों तथा ग्रंथ में कहीं-कहीं और उत्तर अमेरिका के ग्रंथ में उन्होंने नहीं है, क्योंकि ज्यों-ज्यों मनुष्य विविध विधि से प्राकृतिक साधनों पर निर्भर करेगा, त्यों-त्यों वह प्रकृति से छुटकारा तो नहीं पा सकेगा, पर प्रकृति उसके लिए अधिक लचीली (Elastic) या अनुकूल बनेगी। अतः वह प्रकृति को अपने लाभ के लिए अधिक सरलता से प्रयुक्त करेगा। दूसरे अर्थों में, सभ्यता के विकास का अर्थ है कि प्राकृतिक संपदा का अधिकतम उपयोग एवं पृथ्वी और उसके निवासियों में निकट सहयोग।

अत: सेम्पल ने दृढ़ता से नियतिवाद का पक्ष लेने पर भी मानव को प्रकृति का सभी दशाओं में दास नहीं माना। संभवत: U.S.A. व यूरोप के चमत्कारिक विकास से वे अछूती नहीं रह सकीं। संक्षेप में यदि रेटजेल की इस प्रधान शिष्या के द्वारा उद्धृत कुछ प्रारंभिक कठोर नियंत्रण वाली युक्तियों को गौण माने तो उसका चिंतन आधुनिक नियतिवाद या नवनिश्चयवाद से अधिक निकट प्रतीत होता है। सेम्पल ने प्राकृतिक परिवेश के प्रभाव को सभी दृष्टियों एवं बिंदुओं से समझाया। संक्षेप में उसके इन प्रभावों को निम्न चार वर्गों में रख सकते हैं :

(i) मानसिक प्रभाव, (ii) शारीरिक प्रभाव,

(iii) आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव तथा (iv) स्थानान्तरण के फलस्वरूप प्रभाव।

आज के इस प्रगतिशील युग में कठोर नियतिवाद मृतप्राय: माना गया है। नव-निश्चयवादी भी इसे स्वीकार नहीं करते हैं। अत: जिस दृढ़ता एवं तीव्रता के साथ रेटजेल एवं सेम्पल के निश्चयवादी चिंतन ने विद्वान समाज को प्रभावित किया, उसका अधिकांश भाग उसी तीव्रता के अमान्य भी ठहरा दिया गया। सेम्पल के पश्चात् ही कठोर निश्चयवादी चिंतन ने विद्वान समाज को प्रभावित किया, उसका अधिकांश भाग उसी तीव्रता से अमान्य भी ठहरा दिया गया। सेम्पल के पश्चात् ही कठोर निश्चयवावदी चिंतन इतिहास की संकल्पना मानी जाने लगी।

सेम्पल की आलोचना :

सेम्पल की चिंतन की मूलभूत त्रुटि की ओर ध्यान खींचते हुए समालोचकों ने रेखांकित किया कि:

(i) अपने निष्कर्षों के समर्थन में अनेक राष्ट्रीय इकाइयों के इतिहास से दृष्टान्त देने के प्रयास में उन्होंने उन उदाहरणों की ओर ध्यान नहीं दिया जो कि उनके निष्कर्ष से मेल नहीं खाते हैं।

(ii) रोजर मिंशुल के अनुसार नियतिवादियों ने मात्र यह बताने में अपना समय एवं चिंतन नष्ट किया कि किस प्रकार एवं विधि से मानव पर प्रकृति हावी है - वे इससे आगे वास्तविकता को देखते हुए भी अनदेखी करते रहे।

(iii) आज मानव प्रकृति के सामने मात्र मोम का पुतला नहीं है। इसे अपने अंतिम दिनों कुमारी सेम्पल ने भी स्वीकार किया। प्रकृति यदि अत्यधिक बाधाएँ प्रस्तुत करती है तो मानव या तो ऐसे कार्यों को छोड़ देगा, या फिर नव-तकनीक एवं कला-कौशल का विकास कर उसे अपने लिए अनुकूल बनाएगा।

(iv) आधुनिक नगरों का विकास मानव की विशिष्ट कृति का अनूठा उदाहरण है, जहाँ पर प्रत्यक्ष प्राकृतिक प्रभाव प्राय: लुप्त होता दिखाई देता है। यह प्रकृति या निश्चयवादियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है।

(v) उत्पादन के जिन साधनों पर मानवों प्रत्यक्षत: प्रकृति पर निर्भर है, उस पर परिवेश का प्रभाव महत्त्वपूर्ण तो है, परन्तु इस क्षेत्र में भी मानव ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

(vi) उधोग-धंधों का विकास भी मानव की अपनी सफलता है। वह प्राकृतिक परिवेश से अधिक स्वयं मानव द्वारा अधिक नियंत्रित है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आज प्रकृतिवादियों द्वारा सोचा गया ऐसा विस्तृत एवं प्रच्छन्न क्षेत्र तेजी से सिकुड़ता जा रहा है जहाँ कि मानव या तो पूर्णत: प्राकृतिक परिवेश पर ही पहुँच पाए हों। आज सभी स्वीकार करते हैं कि मानव प्रकृति प्रदत्त प्रतिकूलताओं में भी अनुकूलताएँ पैदा कर अपना विकास

निरंतर कर सकता है। परन्तु सेम्पल का मानना भी था कि समान वातावरण में रहने के उपरान्त भी कुछ सामाजिक इकाइयाँ औरों से भिन्न प्रकार का व्यवहार कर सकती हैं। इस दृष्टि से उनका भौगोलिक चिंतन घोर निश्चयवादी न होकर संभावना वादी चिंतन के अधिक नजदीक रहा।

8.4 निष्कर्ष (Summing up)

तार्किक दृष्टि से अमेरिकन विदुषी कुमारी सेम्पल निश्चयवादी चिंतन की अंतिम किंतु सबसे महत्त्वपूर्ण विद्वान रहीं। उन्होंने मात्र रेटजेल के चिंतन का अनुसरण ही नहीं किया, बल्कि उसे विकसित कर बुद्धिमतापूर्ण ढंग से नवीन प्रकार से अपने विख्यात ग्रंथ 'Influence of Geographic Environment' में प्रस्तुत किया। सेम्पल ने मान को पूर्णत: परिवेश या वातावरण का दास माना एवं इसे उनके चिंतन, व्यवहार, धर्म, समाज तथा आचार-विचार में पूर्णत: छाया हुआ पाया। वे रेटजेल के विचारों की कट्टर पोषक एवं विख्यात निश्चयवादी रहीं, किन्तु अपने ग्रंथ के अंतिम भाग में यह स्वीकार किया कि मनुष्य की सूझ-बूझ एवं लगन को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए। उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए उन जैसी निश्चयवादी विद्वान के लिए यह स्वीकार करना भी बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

8.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

निश्चयवाद [Determinism] – इसके अनुसार भौतिक वातावरण के तत्त्व ही मानव की क्रियाओं, उसके जीवन-निर्वाह के साधनों तथा समाज और संस्कृति के प्रतिरूपों को निश्चित करते हैं।

मानव भूगोल [Human Geography] - पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों में मानव वर्गों के क्रियाकलापों और जीवन व्यवस्थापन का अध्ययन ही मानव भूगोल है।

एकेश्वरवादी धर्म - वह धर्म जिसमें सिर्फ एक ही ईश्वर की आराधना की जाती है जैसे मुस्लिम, ईसाई, यहूदी धर्म।

आधुनिक नियतिवाद या नवनिश्चयवाद [Neo-deteminism] - इसके प्रतिपादक ग्रिफिथ टेलर है, जिनके अनुसार मानव पर्यावरण संबंधों का नवीन दृष्टिकोण यह है कि मनुष्य को अपने निजी क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित रहना चाहिए और उनका दोहन उतना ही करना चाहिए जितना प्रकृति को पुन: लौटा सके या वे संसाधन जैविक तंत्र से पुन: चक्र आरंभ कर सके।

सम्भववाद (Possibilism) - सम्भववाद दर्शन फ्रेंच भौगोलिक संप्रदाय द्वारा विकसित है जो यह स्पष्ट करता है कि मानव प्राकृतिक वातावरण के सामने मोम के पुतले की तरह नहीं है जिसे प्रकृति जैसे चाहे उसे ढाल सके वरन् मानव प्रकृति में परिवर्तन करने की क्षमता रखता है तथा प्रकृति से अधिक शक्तिमान है।

8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

8.6.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]

1. एलेन चर्चिल सेम्पल का संक्षिप्त परिचय दें।
2. सेंपल ने किस तरह अमेरिकन भूगोल को समृद्ध किया? संक्षेप में समझाएँ।
3. सेंपल एक कठोर निश्चयवादी थीं। क्या यह कथन सही है? इसकी विवेचना करें।

4. किन बिंदुओं पर सेम्पल की आलोचना की जाती है? स्पष्ट करें।

1.6.2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

1. 'कुमारी सेम्पल नियतिवाद की अग्रदूत मानी जाती है।' इनके द्वारा प्रस्तुत विशेष विचारों को समझाते हुए स्पष्ट करें।

2. 'वर्तमान के विश्व-परिवेश में कठोर नियतिवाद मात्र मिथ्या धारणा बनकर रह गई है।' विस्तार से समझाइए।

3. सेम्पल के भूगोल में योगदान को विस्तार से बताइए।

8.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. भौगोलिक चिंतन एवं तीन दक्षिणी महाद्वीप - डा० मामोरिया एवं जैन

2. भौगोलिक चिंतन का विकास : एक ऐतिहासिक समीक्षा - डा० आर० डी० दीक्षित।

3. भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधितंत्र - एस० डी० कौशिक

4. Geographical Thought - Dr. Sudeepto Adhikari

●●●

भूगोल में मेकिण्डर की देन
Contribution of Mackinder in Geography

पाठ-संरचना (Lesson-Structure)

9.0 उद्देश्य (Objective)

9.1 परिचय (Introduction)

9.2 मेकिण्डर का प्रारंभिक जीवन एवं शिक्षा (Early life and Education of Mackinder]

9.3 कार्य एवं उपलब्धियाँ (Works and Achievements]

9.4 भूगोल में देन (Contribution in Geography]

- 9.4.1 रचनाएँ (Literary Works)
- 9.4.2 महान भौगोलिक चिंतक (Great Geographical Thinker]
- 9.4.3 ऐतिहासिक भूगोलवेत्ता (Historical Geographer)
- 9.4.4 राजनैतिक भूगोलवेत्ता (Political Geographer)
- 9.4.5 हृदयस्थल सिद्धांत (Heartland Theory)

9.5 मेकिण्डर की आलोचना (Criticism of Mackinder)

9.6 निष्कर्ष [Summing Up]

9.7 व्यवहृत शब्दावली [Key Words Used]

9.8 अभ्यासार्थ प्रश्न [Questions for Exercise]

- 9.8.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]
- 9.8.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

9.9 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

9.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों को ब्रिटिश भूगोलवेत्ता हेल्फोर्ड जॉन मेकिण्डर द्वारा भूगोल में योगदान के विषय में जानकारी प्रदान करनी है। इस पाठ को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी जान पाएँगे कि-

1. मेकिण्डर कौन हैं और आधुनिक भौगोलिक चिंतन में उनका क्या स्थान है
2. उनका प्रारंभिक जीवन कैसा था और उनकी शिक्षा कैसी और कहाँ से हुई
3. भूगोल विषय में उनका क्या महत्वपूर्ण योगदान है

4. उनके विचारों का तात्कालिक विश्व पर क्या प्रभाव पड़ा
5. उनके द्वारा प्रतिपादित 'हृदयस्थल सिद्धांत' का सार क्या है
6. किन बिदुओं पर उनकी आलोचना की जाती है।

9.1 परिचय (Introduction)

ब्रिटिश भूगोलवेत्ताओं में हेल्फोर्ड जॉन मेकिण्डर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ब्रिटेन में भौगोलिक चिंतन का आरंभ उन्हीं के द्वारा 1887 ई० में शुरू हुआ। इसीलिए उन्हें ब्रिटेन में 'भूगोल का पितामह या अग्रदूत' माना जाता है। इससे पूर्व वहाँ के विश्वविद्यालयों ने भूगोल का अध्ययन भू-विज्ञान (Geology) के अंतर्गत भौतिक भूगोल के रूप में और जीव-विज्ञान (Biology) के अंतर्गत प्राणियों एवं वनस्पतियों के रूप में किया जाता था। इतिहास के अंतर्गत भौतिक वातावरण एवं मानव भूगोल तथा मानव के आर्थिक भूगोल संबंधी क्रिया-कलापों का अध्ययन किया जाता रहा। भौगोलिक चिंतन एवं उच्च शिक्षा के विकास हेतु ब्रिटेन में तब तक कोई प्रयास ही नहीं किया गया था। 19वीं सदी के प्रारंभ में कुछ समय के लिए कुछ विश्वविद्यालयों में भूगोल के व्याख्याता पद पर नियुक्तियाँ भ ी की गई। ब्रिटेन में भौगोलिक शिक्षा को व्यवस्थित करने का श्रेय 1830 ई० में स्थापित रॉयल ज्याग्राफिकल सोसायटी (Royal Geographical Society) को है, जिसके प्रयास एवं आर्थिक सहायता के कारण ही सर्वप्रथम 1887 ई० में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 27 वर्ष के एक युवक मेकिण्डर की नियुक्ति एक भूगोलवेत्ता के रूप में प्रवक्ता (reader) पद पर हुई। यही से ब्रिटेन में भूगोल के क्षेत्र में एक नई दिशा की शुरूआत हुई।

9.2 मेकिण्डर का प्रारंभिक जीवन एवं शिक्षा (Early Life and Education of Mackinder)

हेल्फोर्ड जॉन मेकिण्डर [Halford John Mackinder] का जन्म 15 फरवरी 1861 ई० में इंगलैंड के गेन्सबरो (Gainsborough), लिंकनशायर (Linconshire) में एक डॉक्टर के पुत्र के रूप में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा Queen elizabeth's Gramneer School (Now Queen Elizabeth's High School), गेन्सबरो में ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए वे पहले Espone College और क्राइस्ट चर्च (Christ Church), ऑक्सफोर्ड गए। ऑक्सफोर्ड में उन्होंने प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन किया और चैलेन्जर खोज यात्रा के प्राकृतिक वैज्ञानिक हेनरी नौटीज मोसले (Henry Nottidge Moseley) के मार्गदर्शन में जंतु विज्ञान (zoology) में विशेषज्ञता हासिल की। उन्होंने इतिहास का भी अध्ययन किया। वे भौतिक एवं मानव भूगोल को एक ही विषय के रूप में पढ़ाए जाने के पक्षधर थे। उन्होंने 1893 में ऑक्सफोर्ड यूनियन (Oxford Union) के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा प्रदान की।

हेल्फोर्ड जे. मेकिण्डर

9.3 कार्य एवं उपलब्धियाँ (Works and Achievements)

1884 ई० में मेकिण्डर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भूगोल के प्रवक्ता के रूप में नियुक्त हुए जो उस समय का सबसे सम्मानित शिक्षण पद था। खुद मेकिण्डर के अनुसार "A platform has been guien

to a geographer." 1899 में राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों का शैक्षणिक स्तर एवं भौगोलिक शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ाने हेतु 'School of Geography' खोलने पर विशेष बल दिया जिससे प्रतिवर्ष भूगोल में प्रशिक्षण के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। भविष्य के भूगोलवेत्ताओं के उच्च स्तरीय शिक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण इस संस्था के प्रथम निदेशक मेकिण्डर बने। इसी वर्ष उन्हें भूगोल के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर पदोन्नत किया गया। 1895 में 'London School of Economics' की स्थापना की। वे नियमित रूप से रॉयल ज्यॉग्राफिकल सोसायटी में व्याख्यान भी देते रहे। भूगोलवेत्ता होने की योग्यता साबित करने के लिए 1899 ई० में उन्होंने पूर्वी अफ्रीका की खोज यात्रा की और कीनिया पर्वत पर चढ़नेवाले प्रथम व्यक्ति कहलाए।

1892-1903 तक वे विश्वविद्यालय कॉलेज में प्राचार्य के रूप में काम करते रहे। 1905-10 तक वे London School of Economics के निदेशक रहे। 1810-1922 तक वे ब्रिटिश संसद के सदस्य रहे। यहाँ उन्होंने कुछ समय के लिए संसद की 'Empirical Shipping Committee' और 'Empirical Economic Committee' के चेयरमैन पद पर भी काम किया। अस्वस्थता के कारण 1922 से उन्होंने अधि कांश पदों से अवकाश ले लिया।

मेकिण्डर ने 1902 में ऐतिहासिक भूगोल का गंभीर अध्ययन कर एक श्रेष्ठ प्रथम वर्गीय ग्रंथ 'ब्रिटेन और ब्रिटिश सागर' (Britain and the British Seas) प्रकाशित की, जिसमें ब्रिटिश भूगोल के मूल-सिद्धांतों का संक्षिप्त रूप और ब्रिटिश इतिहास की समीक्षा की गई है। उनके चिन्तन पर रिचथोकन और हेटनर के समन्वयवादी विचारों का तो प्रभाव पड़ा ही, साथ ही वे रिटर, रेटजेल, ब्लाश एवं भर्टोनी के चिंतन से भी विशेष रूप से प्रभावित रहे। उन्होंने स्पष्टत: स्वीकारा कि स्थानों के भौगोलिक वातावरण को और उनके प्रभावों को समझे बिना समय के अनुसार हुई घटनाओं को बिल्कुल नहीं समझा जा सकता।

1904 में उन्होंने Royal Geographical Society के समक्ष एक पत्र (paper) 'The Geographical Pioet of History' [इतिहास का भौगोलिक धुराग्र] प्रस्तुत किया। इसमें इन्होंने हृदय-स्थल सिद्धांत, धुरी (pioet) एवं तटीय या किनारों के प्रदेश की व्याख्या की है। यह प्राय: भू-राजनीति (Geopolitics) के अध्ययन क्षेत्र में एक आधार-स्तंभ के रूप में माना जाता रहा है जबकि मेकिण्डर ने इस शब्द का प्रयोग नहीं किया है। प्रारंभ में भूगोल को छोड़कर कहीं भी इस सिद्धांत पर ध्यान नहीं दिया गया, किंतु बाद में इसने विश्व-शक्तियों के वैदेशिक नीतियों (Foreign Policies) को काफी प्रभावित किया।

1919 में उन्होंने अपने हृदय स्थल सिद्धांत को विकसित कर 'Democratic Ideals and Reality' नामक व्याख्यान Royal Geographical Society के सामने दिया तो उसे सुनने के लिए उस समय के जाने-माने विद्वान, राजनेता और सामाजिक विभूतियाँ उपस्थित थी। इन व्याख्यानों में मेकिण्डर ने विश्व की महान शक्तियों के बदलते पैंतरे, उनका सामरिक महत्त्व, आपसी टकराव की स्थिति, ब्रिटेन के संवेदनशील सुरक्षा स्थल, इनमें फ्रांस, इटली, मिस्र, भारत एवं सुदूर पूर्वी देशों की विशेष भूमिका आदि पर भी विस्तार से प्रकाश डाला।

1920 में संसद सदस्य के रूप में उनकी सेवाओं के लिए उन्हें 'New Year Honours के रूप में Knight की उपाधि से सम्मानित किया गया। वे जीवनपर्यन्त भूगोल के विकास में लगे रहे तथा 1947 में उनकी मृत्यु हो गई।

9.4 भूगोल में देन (Contribution in Geography)

9.4.1 रचनाएँ [Literary Work] :

उन्होंने अपने जीवनकाल में मुख्यत: छह पुस्तकें लिखीं, जो निम्नलिखित हैं :

1. 1902 – "Britain and the British Seas.

2. 1905 – "Man-Power as a Measure of National and Imperial strength," National and English Review, XIV.

3. 1905 – "Geography and History", The Times.

4. 1908 – "The Rhine : Its valley and History," London : Chatto and Windows.

5. 1919 – "Democratic Ideals and Reality." NY : Holt.

6. 1943 – "The Round world and the winning of the peace", Foreign Appairs.

9.4.2 महान भौगोलिक चिंतक (Great Geographical Thinker)

ऐतिहासिक भूगोल, मानवीय भूगोल एवं भू-राजनीति के जाने-माने विद्वान मेकिण्डर ने शुरू से ही भूगोल के समन्वयकारी स्वरूप को महत्त्व दिया। उनके अनुसार भूगोल में मानव और उसके भौतिक पर्यावरण के बीच होनेवाली अन्त:क्रियाओं क सर्वांग अध्ययन किया जाता है। 1902 में उन्होंने स्पष्ट किया कि "We hold that no rational political geography can exist which is not biilt upo to physical geography." इन्होंने विश्व संदर्भ और ब्रिटेन उपनिवेश एवं ब्रिटेन के वर्चस्व को ध्यान में रखते हुए उस समय की वैश्विक (global) समस्या को हमेशा भौगोलिक पृष्ठभूमि से ही आँकने का प्रयास किया। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् सभी ने उनके सिद्धांतों के महत्त्व को जाना, समझा एवं स्वीकारा।

9.4.3 ऐतिहासिक भूगोलवेत्ता [Historical Geographer]

प्रारंभ में भूगोल इतिहास का ही एक गौण अंग था, जिसे अलग स्थान दिलाने के लिए मेकिण्डर ने निरंतर प्रयास किया। ऐतिहासिक भूगोल पर अपना व्यवस्थित मत प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि इतिहास बिना भूगोल के अधूरा है, क्योंकि स्थानों के स्वरूप एवं पृष्ठभूमि को समझे बिना समय की दृष्टि से वर्णित स्थानों की घटनाओं को नहीं समझा जा सकता है। इस 'समय' और 'स्थान' का अध्ययन इतिहास और भूगोल दोनों में होता है। अत: कहा जा सकता है कि सभी ऐतिहासिक घटनाएँ भूगोल से जुड़ी हुई हैं और दोनों एक-दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते। ऐतिहासिक भूगोल के स्वरूप एवं चिंतन को समझते हुए इन्होंने इसका विकास किया। उनके विचारों पर रिटर एवं ब्लाश के प्रारंभिक विचारों का पूर्ण प्रभाव पड़ा।

9.4.4 राजनैतिक भूगोलवेत्ता [Political Geographer]

मेकिण्डर ने शुरू से ही एक राजनैतिक भूगोलवेत्ता की तरह प्रसिद्धि हासिल की तथा तात्कालिक भू-राजनीति के क्षेत्र में उनका काफी योगदान रहा। उनके द्वारा विकसित राजनीतिक दर्शन रेटजेल से पूर्वत भिन्न रहा। उन्होंने 1902 में प्रकाशित 'Britain and British seas' पुस्तिका में विश्वव्यापी ब्रिटेन के उपनिवेशों की भूमिका, उत्तरदायित्व एवं सावधानियों पर प्रकाश डाला तो 1904 में 'The Geographical Pioet History' में हृदय-स्थल सिद्धांत दिया, जिसे वास्तव में 'राजनीतिक भूगोल का गुटका' कहा जा सकता है। फिर इसका विकसित रूप 'संसार द्वीप का सिद्धांत' (Theory of World Island) दिया, जिसमें

थलीय और समुद्री शक्तियों का तुलनात्मक-पूरक दृष्टिकोण रखा। इसे जर्मन भूगोलवेत्ता हॉशोफर (Houshofer) ने सराहते हुए संसार के भौगोलिक दृष्टिकोणें मं सबसे बड़ा बतलाया। 1939 में जर्मनी-रूसी गुट बनने के बाद उनके इस दृष्टिकोण और संसार की भू-राजनीति पर बहुत चर्चा हुई। अत: कहा जा सकता है कि राजनैतिक भूगोल के विकास में मेकिण्डर का काफी योगदान है।

9.3.5 हृदयस्थल सिद्धांत [Heart Land Theory]

मेकिण्डर को राजनैतिक भूगोल के अलावा भू-राजनीति एवं सामरिक व्यवस्था में विशेष रूचि रही। 1904 में "The Geographical Pivot of History" लेख के अनुसार संसार के सभी अज्ञात भागों की खोज हो जाने के कारण समुद्री यात्राओं का महत्त्व कम हो गया तथा संसार के सभी भाग यातायात एवं संचार-साधनों के विकास के कारण एक-दूसरे के काफी नजदीक आ गए। उन्होंने माना कि यूरोप, एशिया और अफ्रीका महाद्वीप का सम्मिलित थल भाग 'पुरानी दुनिया' कहलाता है, जिसका जल-प्रवाह वाला क्षेत्र) समुद्री शक्ति की पहुँच से बाहर है। इस भाग का भू-राजनीति की दृष्टि से बहुत महत्त्व है। महाद्वीपीय रेलमार्गों के निर्माण और उपनिवेशन के आधार पर वहाँ तीव्र गति से परिवर्तन एवं एक शक्ति का निर्माण हो रहा है जो आंतरिक मार्गों पर कब्जा करने के कारण संसार की केन्द्रीय युद्ध-नीतिक स्थिति (Strategic position) को प्राप्त कर रही है। इस केंद्रीय शक्ति वाले विशाल क्षेत्र को ही 'हृदय-स्थल' (Heart land) कहते हैं। इसके बाहरी भाग में दो अर्द्धचन्द्राकार पेटियाँ हैं-आंतरिक अर्द्धचन्द्राकार पेटी (Inner Cresent), जिसमें सीमावर्ती महाद्वीपीय राज्य स्थित हैं तथा बाह्य अर्द्धचन्द्राकार पेटी (outer crescent), जिसमें अन्य द्वीप या द्वीपीय शक्तियाँ जैसे : ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान आदि स्थित हैं। यह मध्यवर्ती आंतरिक हृदय स्थल बहुत कठिनाई से पहुँचनेवाला मार्ग था। यहाँ स्थित राज्यों को उन्होंने धुराग्र राज्य (Pivat state) कहा।

मेकिण्डर के अनुसार यदि शक्ति-संतुलन (Balance of Power) इस धुराग्र राज्य के अत्यधिक अनुकूल हो जाता है तो उस शक्ति का प्रसार यूरोप-एशिया के सीमावर्ती थल-क्षेत्रों पर हो जाएगा। इसके परिणामस्वरूप इस शक्ति को महासागरीय बेड़ों (flects) के निर्माण के लिए विस्तृत महाद्वीपीय साधनों के प्रयोग की छूट मिल जाएगी और तब उस संसार का साम्राज्य सामने नजर आएगा। भविष्य में थल शक्ति जिसके पास अधिक होगी वही युद्ध में जीतेगा। यदि जर्मनी रूस से मित्रता कर ले तो ऐसा संभव है और तब वे दोनों राष्ट्र संसार पर राज्य कर सकते हैं।

इस स्थिति से निपटने के लिए समुद्र पार की शक्तियों को अपने सैन्य मोर्चे फ्रांस, इटली, मिस्र, भारत और कोरिया (आंतरिक अर्द्धचन्द्राकार पेटी में स्थित राज्य) में बनाने होंगे, जो धुराग्र मित्रों (power allies) को बलीय शक्तियों का विकास करने पर बाध्य करेंगे और उनको महासागरीय बेड़े रखने पर ध्यान केंद्रित करने से रोकेंगे।

1914 में जर्मनी ने संसार पर प्रभुत्व जमाने के लिए रूसी हृदय-स्थल पर आक्रमण कर प्रथम विश्वयुद्ध की शुरूआत कर दी तथा मित्र-राष्ट्रों के जहाजी बेड़ों को बाल्टिक सागर तथा काला सागर में आने से रोक दिया। इस युद्ध के परिणामों के आधार पर 1919 में मेकिण्डर ने अपने हृदय-स्थल सिद्धांत का विकसित रूप 'Democratic Ideals and Reality' नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने हृदय-स्थल क्षेत्र में पूर्वी यूरोप को भी शामिल कर दिया गया तथा इसे 'संसार द्वीप' का सिद्धांत (Theory of World Island) कहा। इसके अनुसार-

Who rules East Europe command the Heart Land,
who rules the Heart land command the world Island,
who rules the world Island commands the whole world.
[Democrative Ideals and Reality, 1919]

इसके अनुसार यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका का सम्मिलित महाद्वीप यूरेअफ्रेशिया ही 'संसार द्वीप' है। उन्होंने अपने व्याख्यान में चेतावनी दी है कि रूस और जर्मनी अपने फायदे के लिए समझौता कर सकते हैं जिसका परिणाम मित्र राष्ट्रों के हितों के विपरीत होगा। अत: इन दोनों राष्ट्रों के बीच स्वतंत्र राज्यों की एक पेटी या मध्यवर्ती राज्य या क्षेत्र (Buffer state or zone) बना देनी चाहिए। साथ ही पेलेस्टाइन (अब फिलिस्तीन), सीरिया, मेसोपोटामिया (इराक) बौसकोरस, डारडेनलीज तथा बाल्टिक सागर का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो जाना चाहिए। भारत और चीन को हृदय-स्थल के आक्रमण से सुरक्षित रखना चाहिए। इस सिद्धांत एवं विश्व भू-राजनीति दर्शन को विश्व-सुरक्षा एवं सामरिक व्यवस्था से जोड़ने के कारण मेकिण्डर को काफी प्रसिद्धि मिली। इस सिद्धांत से प्रभावित हो होशकर ने जर्मनी में हिटलर केसामने विश्वद्वीप चिंतन द्वारा विश्व विजय का आदर्श रखा, जिसके कारण विश्व दूसरे विश्वयुद्ध की ओर मुड़ गया। अत: मेकिण्डर ने पुन: चेतावनी दी कि जब भी शक्ति का संतुलन हृदयस्थल के पक्ष में बनने लगता है तो निकटवर्ती प्रदेशों की सुरक्षा एवं भू-राजनीति पर इसका प्रभाव अवश्यंभावी बना रहता है। इसलिए मेण्डिर ने स्थाई ब्रिटिश प्रभाव एवं विश्वव्यापी औपनिवेशिक सुरक्षा के हित में दूर-दूर स्थित संवेदनशील नाभिक क्षेत्रों या देशों (Nuclear areas or countries) एवं समुद्र पार शक्तियों से ब्रिटेन के निरंतर मधुर संबंध बनाए रखना आवश्यक माना। इस प्रकार दो महायुद्धों के बीच यह सिद्धांत बार-बार 1919, 1939, 1946 आदि वर्षों में पुनर्जीवित हुआ और उस पर निंरतर परिवर्तशील एवं जटिल आचरण व परिवेश के दृष्टिकोणों से विश्लेषणात्मक चिंतन हुआ।

9.5 मेकिण्डर की आलोचना (Criticism of Mackinder)

आज 1919 की तुलना में महाशक्तियों का स्वरूप बदल जाने के कारण हृदयस्थल सिद्धांत का विशेष महत्त्व नहीं रहा। उपनिवेशों की स्वतंत्रता और चीन, भारत, जापान, ब्राजील आदि देशों का क्षेत्रीय शक्तियों के रूप में विकास तथा तेल उत्पादक देशों में अपार धन संग्रहित होने से संपूर्ण विश्व की भू-राजनीति ही बदल चुकी है। जलपोत युद्धों व महासागरीय शक्तियों के वर्चस्व में कमी तथा नवीन वायुमार्गों के विकास ने आर्कटिक क्षेत्र का महत्त्व बढ़ा दिया है, क्योंकि इसके दोनों ओर विश्व की महान शक्तियाँ जैसे U.S.A, U.S.S.R व अब चीन भी अवस्थित है। अत: यह ध्रुवीय क्षेत्र की नवीन हृदय स्थल बन गया है। इस आधुनिक हृदयस्थल में जर्मनी और यूरोपीय रूस के अतिरिक्त समस्त उत्तरी यूरोप, सोवियत संघ, उत्तरी चीन, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका का आंतरिक भाग सम्मिलित हैं। इसं वायुयान युग में सभी राष्ट्रों के एक-दूसरे के समक्ष स्थित होने तथा वर्तमान परमाणु युग में प्रक्षेपास्त्रों' (Missiles) और रॉकेटों के प्रयोग ने मेकिण्डर के सिद्धांत के महत्व की विश्वद्वीप एवं हृदयस्थल रणनीति सुषुप्त है, फिर भी हृदयस्थल का मालिक सोवियत संघ लंबे समय तक विश्व शक्ति U.S.A मालिक सोवियत संघ लंबे समय तक विश्व शक्ति U.S.A. के लिए परेशानी का कारण रहा और अब चीन तेजी से एक शक्ति के रूप में उीर कर उसकी परेशानी का सबब बना रहा है। इसलिए कहा जा सकता है कि कुछ हद तक कुछ परिवर्तनों के साथ मेकिण्डर का हृदय स्थल सिद्धांत आज भी विश्वशक्तियों के बीच मान्य है।

9.6 निष्कर्ष (Summing-up)

ब्रिटेन में 'भूगोल का पितामह' हेल्फोर्ड जॉन मेकिण्डर ब्रिटेन में भौगोलिक विचारधाराओं की शुरूआत करने और अपने प्रसिद्ध हृदय-स्थल सिद्धांत और विश्व द्वीप सिद्धांत के लिए जाने जाते हैं। वे ऐतिहासिक एवं मानवीय भूगोल तथा भू-राजनीति के जाने माने विद्वान रहे। वे शुरू से ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के भू-राजनैतिक चिंतन से तात्कालिक राजनीतिज्ञों एवं विद्वानों को विशेष रूप से प्रभावित करते रहे। ब्रिटेन में 'School of geography और London School of Economics के संस्थापकों में से एक रहे तथा कई पदों पर भी काम किया। उनके हृदयस्थल सिद्धांत में ब्रिटेन की उपनिवेशों की भूमिका, उत्तरदायित्व एवं सावधानियों पर तो प्रकाश डाला ही गया है। साथ-ही-साथ इसमें राष्ट्रों के विश्वव्यापी स्वार्थ, पुरानी दुनिया के विशेष स्थल एवं मानव-प्रसार तथा संवेदन स्थल होने से ऐसे प्रसार की मनोवृति का पुरानी दुनिया पर प्रभाव की भी व्याख्या की गई है। इस सिद्धांत पर ध्यान नहीं देने से ब्रिटेन की दोनों विश्वयुद्धों में विशेष कठिनाई एवं हानि उठानी पड़ी। यह सिद्धांत मुख्यत: महासागरीय शक्तियों से संपन्न राष्ट्रों की महत्वाकांक्षा पर आधारित है जो आज के वायु एवं परमाणु शक्ति संपन्न युग में उतना मान्य नहीं है। फिर भी यहभू-राजनीति एवं राजनैतिक भूगोल में मेकिण्डर की एक बड़ी देन है, जिसने युद्ध-योजनाओं, सामरिक एवं वैदेशिक नीतियों को एक नई दिशा एवं सोच ही है।

9.7 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

धुरी - केन्द्र (Centre)

हृदय स्थल - विश्व या संसार द्वीप का मध्यवर्ती आंतरिक स्थल भाग, जिसके अंतर्गत मध्य एशिया का अंत: प्रवाही प्रदेश सम्मिलित है।

सागरिक - युद्ध के दृष्टिकोण से।

उपनिवेश - दूसरे राष्ट्र के शासन के अधीन परतंत्र राष्ट्र।

भू-राजनीति - धरातल संबंधी राजनीति

धुराग्र (Pivot) राज्य – महाद्वीपीय केन्द्र में स्थित राज्य।

संसार द्वीप – यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका का सम्मिलित महाद्वीप यरो अफ्रेशिया को मेकिण्डर ने संसारद्वीप का नाम दिया।

9.8 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

9.8.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]

1. मेकिण्डर का संक्षिप्त परिचय दें।
2. मेकिण्डर की शिक्षा एवं उपलब्धियों की जानकारी दें।
3. मेकिण्डर ने किन ग्रंथों की रचना की? संक्षेप में बताएँ।
4. क्या आप जानते हैं कि मेकिण्डर एक ऐतिहासिक भूगोलवेत्ता भी थे? कारण बताएँ।
5. राजनैतिक भूगोल में मेकिण्डा का क्या स्थान है।

6. मेकिण्डर एक महान भौगोलिक चिंतक थे।

9.8.2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

1. मेकिण्डर को 'ब्रिटिश भूगोल का पितामह' कहा जाता है। क्यों?

2. ब्रिटेन में मेकिण्डर द्वारा भौगोलिक चिंतन के विकास के लिए किए गए प्रयासों एवं उनके द्वारा विकसित विशेष संकल्पनात्मक विकास को विस्तार से समझाएँ।

3. मेकिण्डर द्वारा दिए गए 'हृदयस्थल सिद्धांत' को विस्तार से समझाते हुए उनकी आलोचनाओं को भी स्पष्ट करें।

9.9 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. भौगोलिक चिंतन एवं तीन दक्षिणी महाद्वीप - डा० मामोरिया एवं जैन

2. भौगोलिक चिंतन का विकास : एक ऐतिहासिक समीक्षा - डा० आर० डी० दीक्षित।

3. भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधितंत्र - एस० डी० कौशिक

4. मानव भूगोल - सी० बी० मोमोरिया

4. Geographical Thought - Dr. Sudeepto Adhikari

●●●

नियतिवाद बनाम संभाववाद
(Determinism Vrs. Possiblism in Geography)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

1.0 उद्देश्य (Objective)

1.1 परिचय (Introduction)

1.2 नियतिवाद/निश्चयवाद (Determinism)

1.2.1 प्राचीन विचारधारा (Ancient Views)

1.3.2 आधुनिक विचारधारा (Recent views)

1.3 आलोचना (Criticism)

1.4 संभावाद (Possibilism)

1.5 आलोचना (Criticism)

1.6 नव निश्चयवाद (Neo Determinism)

1.7 सारांश (Summing up)

1.8 मॉडल प्रश्न (Model Question)

1.9 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1.0 उद्देश्य (Objective)

भूगोल विषय के अन्तर्गत प्राचीन काल से मानव एवं वातावरण संबंधों का अध्ययन होता आया है, परन्तु 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस तथ्य पर विशेष बल दिया गया जिसमें जर्मन भूगोलवेत्ता द्वारा किया गया अध्ययन प्रमुख है जिन्होंने प्रकृति को सर्वेसर्वा बतलाया। उनके अनुसार प्रकृति या वातावरण पूर्णरूप से मानवीय क्रिया-कलापों पर हावी है अर्थात् माव की सम्पूर्ण क्रिया विधि पर प्रकृति का नियंत्रण है। किन्तु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भूगोल के अध्ययन में मानवीय पक्ष को शामिल किया गया जिसमें मानव को सर्वोपरि बतलाया गया, जहाँ से भूगोल के अध्ययन में दो विचारों का विकास हुआ। एक जो प्रकृति को सर्वेसर्वा माना है, वे वातावरण या नियतिवाद या निश्चयवाद (Environmentalism) (Determinism) के समर्थक कहलाये। वहीं दूसरी ओर मानव को अधिक प्रभावशाली बतलाने वाले सम्भववाद (Possiblism) के समर्थक कहलाये। वर्तमान समय में एक तीसरा मत प्रतिपादन हुआ है जो प्रकृति और मानव के बीच आपसी संबंध की व्याख्या करता है जिसे नव-निश्चयवाद (Neo-Determinism) Present Day Determinism या वैज्ञानिक निश्चयवाद (Scientific Determinism) 'रुको और बढ़ो' (Stop and go) कहा जाता है।

1.1 परिचय (Introduction)

इस इकाई का उद्देश्य विद्यार्थियों को निश्चयवाद या नियतिवाद (Determinism), सम्भववाद (Possibilism) और नव-निश्चयवाद (Neo-Determinism) या वैज्ञानिक निश्चयवाद (Scientific Determinism) या रूको और बढ़ो (Stop and Go) विचारधारा से अवगत कराना है।

1.2 नियतिवाद/निश्चयवाद (Determinism)

समस्त भौगोलिक अवधारणाओं के इतिहास में मानव और प्रकृति की अन्त:क्रिया के अध्ययन के लिए विभिन्न पद्धतियाँ और वैचारिक सम्प्रदाय रहे हैं। निश्चयवाद इनमें से एक महत्त्वपूर्ण दर्शन है जो किसी-न-किसी रूप में द्वितीय महायुद्ध के काल तक विशेष रूप से निरन्तर बना रहा। निश्चयवादी विचारधारा का सार यह है कि इतिहास सभ्यता, जीवन शैली और समाज के समूह अथवा राष्ट्र की विकास की अवस्थाएँ पूर्ण रूप से अथवा अधिकांश में पर्यावरण के भौतिक तत्त्वों से नियंत्रित होती है। निश्चयवादी साधारणत: मानव को निष्क्रिय एक अभिकर्ता मानता है जिस पर भौतिक तत्त्व क्रियाशील होते हैं और उसके व्यवहार और निर्णय करने की प्रवृत्ति को नियंत्रित करते हैं। अर्थात् इस विचारधारा के अनुसार - ''मानव प्रकृति का दास है।''

जिसमें विभिन्न विद्वानों और दार्शनिकों ने इस संबंध में अपने-अपने विचारों को व्यक्त किया जिनको दो भागों में बाँटा गया है:-(i) प्राचीन विचारधारा एवं (ii) आधुनिक विचारधारा।

1.2.1 प्राचीन विचारधारा :-

इस विचारधारा के प्रतिपादन का श्रेय ग्रीक दार्शनिकों को जाता है जिन्होंने उच्चावच, जलवायु, मिट्टी आदि प्राकृतिक तत्त्वों का मानवीय प्रभाव पर उल्लेख किया है। तत्पश्चात् यूनानी भूगोलवेत्ताओं का स्थान आता है जिसमें हिप्पोक्रेटस (Hippocratus) की विचारधारा काफी महत्वपूर्ण है, जिन्होंने अपने ग्रन्थ 'On Airs, Water and Places' में जलवायु और स्थल की व्याख्या करते हुए ठण्डे प्रदेशों के लोग गर्म प्रदेशों की अपेक्षा अधिक परिश्रमी होते हैं। इसका उदाहरण उन्होंने यूरोप और एशिया के लोगों की तुलना करके किया था। उन्होंने पर्वतीय प्रदेश के लोगों को संघर्षशील और कठीन परिश्रमी और जल्दी थक जानेवाला बतलाया; इसी प्रकार हेरोडोटस (Herodotes) ने मिश्र की सभ्यता, संस्कृति के विकास के लिए वहाँ की उपजाऊ मिट्टी, नील (Nile) नदी का जल एवं अन्य प्राकृतिक तत्त्वों की उत्तरदायी बतलाया है। इसी प्रकार Aristotte (अरस्तु) ने अपनी पुस्तक 'Politics' में भी इस विचारधारा को व्यक्त करते हुए लिखा है ''यूरोप के शीत प्रधान देशों के निवासी बहादुर होते हैं, किन्तु विचारों और तकनीकी गुणों की उनमें कमी पाई जाती है। किन्तु इसके विपरीत एशिया के निवासी विचारवान और कुशल होते हैं, परन्तु उत्साही नहीं।''

प्राचीन काल में स्ट्रेबो ने अपने विश्वकोषीय ग्रन्थ 'भूगोल' (Geography) में स्थान-स्थान पर उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मानवीय स्वभाव, बस्ती विकास, उसके विशेष व्यवहार, आचार-विचार एवं ध र्म, आदि पर प्राकृतिक तत्त्वों-जलवायु एवं उसके कारण धरातल, स्थिति मिट्टी आदि के प्रभाव को विस्तार से एवं सुन्दर विधि से समझाया है। उनके अनुसार यूरोप की आकृति या तटीय बनावट विविधरूपी है, जबकि

अफ्रीका के तट की आकृति प्राय: सपाट है एवं एशिया की मध्यवर्ती है। अत: एशिया एवं अफ्रीका के निवासियों की तुलना में यूरोप के निवासियों का आचरण, व्यवहार एवं शारीरिक रचना अधिक विकसित है। दक्षिणवर्ती यूरोप की शीतोष्ण जलवायु एवं यहाँ के पर्वत व मैदान के प्राय: समरूपी वितरण ने भी यहाँ के निवासियों के विकास पर अनुशासित, सैनिक, उच्च प्रशासक एवं अच्छे नागरिक हैं। रोम साम्राज्य के ऐतिहासिक विकास का कारण भी उसने अनुकूल भौगोलिक पृष्ठभूमि माना। वह प्राचीनकाल कापहला विद्वान था जिसने कि विशद अध्ययन एवं समालोचना के आधार पर प्राकृतिक भूगोल के प्रमुख तत्त्वों एवं सांस्कृतिक तत्त्वों-मानव बस्तियाँ, आवास-प्रवास, उनका चरित्र, कार्य क्षमता, उद्यम, शासन आदि के मध्य संबंध स्थापित करते हुए प्राकृतिक वातावरण के विशेष प्रभाव एवं उनके प्रभाव से विकसित विशेष मानव एवं सांस्कृतिक रचनाओं के वितरण पर उसने बुद्धिमतापूर्ण वर्णन प्रस्तुत किये। यूरोपीय जाति के लक्षणों को सर्वश्रेष्ठ मानने का कारण उसने जलवायु की अनुकूलता को माना।

सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जीन बोदिन (Jean Bodin) नामक विद्वान ने अपने ग्रन्थ 'Republic' में अक्षांश, ऊँचाई, जलवायु, कटिबन्ध आदि के विशेष प्रभावों को सांस्कृतिक तत्त्वों के विकास से संबंधित किया। उसने उत्तर के शीतल एवं शीत प्रदेशों के निवासियों को साहसी, किन्तु निर्दय तथा दक्षिण के उष्ण तथा अद्धोष्ण प्रदेशों के निवासियों को चतुर एवं बुद्धिमान, किन्तु बदला लेने वाले कहा। उसके अनुसार समशीतोष्ण जलवायु विकास में विशेष रूप से सहायक रही है। यहाँ के निवासी अन्य प्रदेशों की तुलना में कुशल, स्फूर्तिदायक एवं उद्यमशील होते हैं। इसका समर्थन करते हुए माण्टेस्क्यू (Montesquieu) ने भी जलवायु के प्रभाव को विशेष व्यापक माना। उसने बताया कि ठण्डी जलवायु के लोग सशक्त, साहसी, स्पष्टवक्ता एवं कपटरहित होते हैं, जबकि दक्षिण के लोग वृद्धों की भाँति भीरू, शरीर में क्षीण, निरूधोगी एवं निष्क्रिय होते हैं। अत: गर्म जलवायु के लोग सशक्त, साहसी, स्पष्टवक्ता एवं कपटरहित होते हैं, जबकि दक्षिण के लोग वृद्धों की भाँति भीरू, शरीर में क्षीण, निरूधोगी एवं निष्क्रिय होते हैं। अत: गर्म जलवायु के प्रभाव से यहाँ धर्म एवं रीति-रिवाज में स्थिरता अथवा जड़ता आ जाती है। उसके अनुसार जलवयु, तटीय एवं द्वीपीय स्थिति, अदि तत्त्वों के प्रभाव को विधि निर्माताओं को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। उसने यह भी बताया कि उपजाऊ देशों में साम्राज्यवाद एवं ऊसर प्रदेश में जनतंत्र का प्रभाव रहता है।

इस प्रकार प्राचीन एवं मध्यकालीन भूगोलवेत्ता जिसमें अल-मसूदी (Al-Masudi), इरबन हाकल (Irban-Hawkle), अल-इदरिसी (Al-Idrisi), इब्न खाल्दून (Ibn-Kaldun) ने पर्यावरण से मानव क्रिया और उनकी जीवन शैली से सहसंबंध स्थापित करने की कोशिश की थी। उदाहरण के लिए, अल-मसूदी (Al-Masudi) ने यह दृढ़तापूर्वक कहा था कि उस भूमि में जहाँ जल की अधिकता पाई जाती है, वहाँ के निवासी प्रफुल्लचित और विनोदी होते हैं, जबकि शुष्क प्रदेशों के निवासी असंतुलित होते हैं। चलवासी (Nomads) जो खुली वायु में निवास करते हैं, वे शक्ति संकल्प और विवेक के लिए जाने जाते हैं।

1.2.2 आधुनिक विचारधारा—

वातावरणवाद या नियतिवाद का वास्तविक विकास 18वीं शताब्दी में जर्मनी में हुआ। जिसमें तत्कालीन भूगोलवेत्ता इमेन्युअल काण्ट (Emmanual Kant) ने प्राकृतिक वातावरण का उल्लेख करते हुए कि न्यू हॉलैण्ड (पूर्वी द्वीप समूह) के निवासियों की आँखे आधी बन्द रहती हैं और वह बिना अपने सिर को पीछे झुकाये (जब तक कि वह उनकी पीठ से नहीं लग जाती। वे अधिक दूरी तक देख नहीं सकते हैं।

चूँकि यह सर्वविदित है कि 18वीं और 19वीं सदी का काल आधुनिक भूगोल का नव युग (Modern Age) कहलाता है जिसमें अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट (Alexender Von Humbolt), रिटर (Ritter), Friedrich Ratzel (रेटजेल) द्वारा किये गए कार्य महत्त्वपूर्ण हैं। जिन्होंने भूगोल के क्षेत्र में न सिर्फ नई-नई विचारधारा का प्रतिपादन किया, बल्कि उन्होंने भौगोलिक निश्चयवाद का प्रतिपादन भी किया जिसे बाद में Ratzel की शिष्या एलन चर्चिल सेम्पुल ने अपने शिक्षक के दर्शन का प्रचार किया और इस प्रकार वह निश्चयवाद की कट्टर समर्थक थीं।

पर्यावरण कारणता (Causation) पूरी उन्नीसवीं शताब्दी में छाया रहा, जब भूगोलवेत्ता स्वयं भूगोल को एक प्राकृतिक विज्ञान मात्र मानते रहे। प्रसिद्ध जर्मन भूगोलवेत्ता कार्ल रिटर ने मानव केन्द्रीय (Anthropocentric) उपागम को अपनाया और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में भौगोलिक निश्चयवाद का प्रचार किया। कार्ल रिटर ने विभिन्न भौतक पर्यावरण की अवस्थाओं से मानव की शारीरिक बनावट, शारीरिक गठन और स्वास्थ्य में भिन्नताओं का कारण स्थापित करने का प्रयास किया था। उसने यह भी स्पष्ट किया था कि तुर्कोमन लोगों की संकरी आँखें, उनपर मरूस्थल का स्पष्ट प्रभाव है। आधुनिक भूगोल के संस्थापकों में से एक अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट जो रिटर का ही समकालिन था उसने यह स्पष्ट कहा था कि पर्वतीय प्रदेशों के निवासियों की जीवन पद्धति मैदान के लोगों से भिन्न होती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में कुछ भूगोलवेत्ताओं ने काम किया जिसमें हैकल (Hackle), बैकल (Buckle) तथा डिमोलिन्स (Demolins) के नाम प्रमुख थे, जिन्होंने डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त का समर्थन करते हुए मानव समाज पर प्राकृतिक वातावरण के प्रभाव और नियंत्रण का वर्णन किया।

डिमोलिन्स के अनुसार–''समाज का निर्माण वातावरण द्वारा ही होता है।''

किन्तु आधुनिक काल में वातावरण निश्चयवाद के नये विचारधारा को विकसित करने को श्रेय रेटजेल (Ratzel) को जाता हे जिन्होंने अपनी ग्रन्थ 'Anthropogeography' में डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त का समर्थन करते हुए रेटजेल (Ratzel) के अनुसार–''हमारी बुद्धि, संस्कृति एवं सभ्यता की उपलब्धियों की तुलना एक चिड़िया की स्वच्छन्द उड़ान से नहीं की जा सकती, उसकी तुलना तो एक पौधे के तने से की जा सकती है-क्यों हम सर्वत्र पृथ्वी से आबद्ध हैं ..... मानव अपना मस्तिष्क आकाश में चाहे जितना ऊँचा क्यों न उठा ले तथापि उसके पैर सदा ही धरती पर ही टिके रहेंगे तथा उसकी धूल (प्रकृति) में विलीन होगी। इतना सब सोचते हुए भी रेटजेल (Ratzel) ने मानव के बुद्धिमत्तापूर्ण चातुर्य एवं अपने कौशल से विकसित सुविधाओं की सराहना की। उसे मानव की क्रियाशीलता की झलक दिखायी दी, जिसका उन्होंने अपनी पुस्तक 'Anthropogeography' के दूसरे खण्ड में (मानव बस्तियों, उनके आकार, जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व, लोगों के रहन-सहन इत्यादि सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक वातावरण का) भी उल्लेख किया है।

(Ratzel) के इस विचारधारा को उनकी शिष्या अमेरिकी भूगोलवेत्ता एलन चर्चिल सेम्पुल (Ellen Churchill Sample) ने आगे बढ़ाया। उन्होंने अपनी पुस्तक ''भौगोलिक वातावरण के प्रभाव'' (Influences of Geographic, Environment) का आरम्भ ही उसने निम्न पंक्तियों से किया : ''मनुष्य पृथ्वीतल की उपज है, इसका अभिप्राय केवल इतना ही नहीं है कि वह पृथ्वी की सन्तान है, उसकी धूल का कण है,

किन्तु यह भी है कि पृथ्वी ने उसे मातृत्व दिया है, उसका पालन-पोषण किया है, उसके लिए कर्त्तव्य निश्चित किये, उसके विचारों को दिशा दी है, उसके सामने कठिनाईयाँ उत्पन्न की है जिससे उसके शरीर को बल मिला है, उसकी बुद्धि को प्रखर किया है; पृथ्वी ने उसे नौसंचालन अथवा सिंचाई की समस्याएँ दी हैं और साथ-ही-साथ उसके कान में समस्याओं का हल भी बतला दियया हे। उसने उसकी हड्डियों और ऊतक में, उसके मस्तिष्क और आत्मा में प्रवेश किया है, पर्वतों पर चढ़ने के लिए उसे फौलादी मांसपेशियाँ प्रदान की है, तट के सहारे इन्हें कमजोर और ढ़ीला छोड़ दिया है, किन्तु इसके स्थान पर उसकी छाती और हाथों की शक्ति का पूर्ण विकास किया है जिससे वह अपने पतवारों को चला सके। नदी घाटियों में उसको उपजाऊ भूमि दी है .....।''

कुमारी सेम्पल ने अपनी पुस्तक में विभिन्न क्षेत्रों में निवास कर रहे लोगों की वैचारिक विशेषताओं में भेद किा है और यह दृढ़तापूर्वक कहा कि पर्वतों में निवास करनेवाले प्रधान रूप से रूढ़िवादी होते हैं। उसके पर्यावरण में उसको परिवर्तन के लिए प्रेरणा देने के लिए बहुत कम होता है और बाहर से उसके पास बहुत कम पहुँच पाता है। अत: नवाचार उसके लिए प्रतिकारी होता है। वास्तव में विश्व के ठीक प्रकार से जुड़े हुए मैदानी भागों की तुलना में, एकलित पर्वतीय तथा सापेक्ष प्रथ्यकारी पर्वतीय भागों में नवीन विचारों की विसरण प्रक्रिया और नवाचार धीमा रहता है। पहाड़ी क्षेत्र के निवासियों का यह सापेक्ष, रूढ़िवादिता और अंधविश्वास की भावना को जन्म देते हैं। वे उनकी परंपराओं के प्रति अत्यन्त संवेदी होते हैं और आलोचना को पसन्द नहीं करते हैं। उनमें कट्टर धार्मिक भावना होती है और परिवार के प्रति तीव्र प्रेम होता है। अपने अस्तित्व के लिए कड़ा संघर्ष इन पहाड़ी लोगों को परिश्रमी, मितव्ययी, सतर्क और ईमानदार बनाता है। इसके विपरीत यूरोप के मैदान के निवासी शक्ति सम्पन्न, गंभीर, भावुक की अपेक्षा विचारशील, आवेगी की अपेक्षा सचेत होते हैं। भूमध्यसागरीय प्रदेश जहाँ जलवायु शीतोष्ण और सम है, वहाँ के निवासी प्रसन्नचित्त और कल्पनाशील होते हैं और उनका जीवन सुगमता से चलता है।

प्रसिद्ध अमेरिकी भूगोलवेत्ता एल्सवर्थ हंटिगटन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''मानव भगोल के सिद्धांत'' (Principles of Human Geography) लिखी थी, जिसमें उन्होंने हिप्पोक्रेटस के काल से अब तक के सबसे अधिक महत्वपूर्ण वातावरणीय कारणता को नवीन और निर्णायक रूप प्रदान किया। हंटिगटन के दर्शन (Thought) का मूल यह था कि किसी प्रदेश में सभ्यताओं द्वारा सर्वोच्च उपलब्धियाँ विशेष रूप से विशेष प्रकार की जलवायु से संबद्ध होती हैं और जलवायु की विभिन्नताएँ इतिहास की संस्कृति में 'स्पन्दन' उत्पन्न करती हैं। हंटिंगटन ने प्राचीन यूनानी स्वर्ण युग, पश्चिमी यूरोप के पुनर्जागरण और लौह-उत्पादन और शेयरों के मूल्यों में चक्रीय अस्थिरता को जलवायु चक्र से संबंधित बताया। हंटिगटन ने विश्व को सम और विषम जलवायु प्रदेशों में विभाजित किया था कि प्राचीन सभ्यताएँ (मिश्र, मेसोपोटामिया, चीनी और सिन्धु) नदी घाटियों की सम जलवायु में ही विकसित हुई थी। उसने आक्रमण और जनजाति युद्ध कला की परिकल्पना भी स्थापित की थी। मध्य एशिया की चलवासी जातियों का बाहर की ओर भारत पर विजय का मार्ग प्रशस्त किया था और तेरहवीं शताब्दी में पूर्वी यूरोप पर आक्रमण के कारण इन प्रदेशों में समाप्त हो रहे चारागाहों को बताया जा सकता है, इन चलवासी लोगों का जीवन निर्भर था। हंटिंगटन के अनुसार धर्म और जातीय गुण जलवायु की उपज है। लगभग 20° से० तापक्रम और परिवर्तित होनेवाली वायुमंडलीय अवस्था (शीतोष्ण चक्रवाती मौसम) उच्च मस्तिष्क और शारीरिक कार्य क्षमता के लिए आदर्श अवस्थायें हैं। इस

प्रकार की जलवायु उत्तर-पश्चिम यूरोप के देशों में पायी जाती हैं। यूरोपवासियों द्वारा विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में विकास का कारण उसके अनुसार आर्द्र, उष्ण और कष्टदायक मौसम है जो वहाँ के निवासियों को निश्चेष्ट, आलसी, अनिपुण और भीरू बनाता है।

उसके बाद के भूगोलवेत्ताओं जैसे हैल्फोर्ड मेकिण्डर, चिशोल्म, डेविस, बोमन, रोबर्टमिल, गैडीस, हरबर्टसन आदि ने भी समाज की प्रगति को निश्चयवादी तथ्य के रूप में वर्णित किया था। इस सिद्धान्त की सराहना के रूप में वर्णित किया था। इस सिद्धान्त की सराहना उस समय पूरे विश्व में की गई और काफी दिनों तक मान्य रही।

1.3 आलोचना (Criticism)

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् नियतिवाद या निश्चयवाद या पर्यावरणवाद विचारधारा की काफी आलोचना की जाने लगी है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ग्रेट-ब्रिटेन और अन्य देशों के अनेक भूगोलवेत्ताओं ने पर्यावरणवादियों द्वारा एकपक्षीय दृष्टिकोण की ओर ध्यान दिलाया है जिसमें उन्होंने प्रकृति की सक्रिय भूमिका की ऐतिहासिक यथार्थता की व्याख्या को बढ़ा चढ़ाकर दिखाया है तथा मानव को निष्क्रिय रूप में स्वीकार किया है। जबकि मानव द्वारा भूतल, आकाश, सागर सतह एवं सागर तली में की गई अभूतपूर्व खोज, विकास, शोध एवं अन्वेषण और निरन्तर उन्नत तकनीक विकास एवं प्रयोग के गतिशील प्रभाव के कारण उसका सामान्य प्राकृतिक पिरिवेश पर निश्चित प्रभाव दिखायी देने लगा है। आज यह स्वीकार किया जा रहा है कि मानव प्रकृति प्रदत्त प्रतिकूलताओं में भी अनुकूलताएँ पैदा कर अपने विकास को जारी रखे हुए हैं। इसी कारण आज सांस्कृतिक वातावरण को जारी रखे हुए हैं। इसी कारण आज सांस्कृतिक वातावरण एवं उसके तत्त्वों को भी पूरी-पूरी मान्यता मिल सकी है। अतः नियतिवाद पर बहुपक्षीय आक्षेप लगाये गये। उसकी अनेक प्रकार से आलोचनाएँ की गईं–

(i) Hartshorne (हार्टशोर्न) ने नियतिवाद को पूर्णतः इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि यह प्रकृति और मानव को अलग करता है और इस प्रकार यह विषय की मूलभूत एकता को नष्ट करता है, अर्थात् संगठित विज्ञान के रूप में भूगोल का विरोधी है।

(ii) रोजर मिंशुल के अनुसार नियतिवादियों ने मात्र यह बताने में अपना चिन्तन एवं समय नष्ट किया कि किस प्रकार एवं विधि से मानव पर प्रकृति हावी है वह इससे आगे वास्तविकता को देखते हुए भी अनदेखी करते रहे। अति प्राचीनकाल से ही मानव ने प्रतिकूलताओं के विरूद्ध संघर्ष करते हुए अनुकूलता का क्षेत्र विस्तृत करते हुए कई आविष्कार किये। जैसे-पहिया, हल व कृषि यन्त्र, पशुओं का विविध उपयोग, वस्त्र, नगर एवं नगरों में सुविधा का विकास और उनका बस्ती क्रम, आदि कुछ उल्लेखनीय उदाहरण हैं। यदि इनकी महत्ता को समय-समय पर कठोर नियतिवादी स्वीकार करते तो सम्भववादी विचार तभी समान रूप से महत्वपूर्ण माने जाते।

(iii) प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक हीगेल ने निश्चयवाद का स्पष्ट खण्डन करते हुए कहा कि समान भौतिक दशाएँ अथवा प्रायः समरूपी प्राकृतिक प्रदेश होते हुए भी ऐसे स्थानों के सभी मानव समूह सर्वत्र (उस प्रदेश में) समान रूप से विकसित नहीं हो पाते। सर्वमान्य विषुवतरेखीय प्रदेशों में हिन्देशिया एवं मलेशिया में जो कुछ विकास दिखायी देता है, स्पष्टतः वैसा विकास या कार्य की सामान्य अवस्थाएँ कांगो

या अमेजन बेसिन में नहीं दिखायी देतीं। उसके लिए मानवीय चातुर्य, समुचित नेतृत्व, व्यवस्थित रूप से भूमि का उपयोग, बीमारियों एवं कीटाणुओं पर नियंत्रण एवं मानव की आदतों में व्यवस्थित नव-विकास उत्तरदायी कहा जा सकता है। आज क्यूबा एवं जावा में उत्तम किस्म से गन्ने की कृषि एवं मलेशिया में वैज्ञानिक विधि से रबर के बगान, भारत के विविध फसलों की उन्नत कृषि विकसित की गयी है। अत: एक ही प्रकार के परिवेश में भी मानव द्वारा अनेक प्रकार का विकास हुआ।

(iv) कठोर नियतिवाद को अब वास्तविक नहीं माना जाता। आज मानव प्रकृति के सामने मात्र मोम का पुतला नहीं है, इसे अपने अन्तिम दिनों में ऐलन सेम्पुल ने भी स्वीकार किया। मानव के बढ़ते हुए प्रभाव एवं उससे विकसित नव-स्थल स्वरूप को ब्लाश (Blache) ने तो स्पष्टत: स्वीकार किया। प्रकृति यदि अत्यधिक बाधाएँ प्रस्तुत करती है तो मानव या तो ऐसे कार्यों को छोड़ देगा, या फिर यदि वह कार्य उसके लिए उपयोगी है तो वह नव तकनीक एवं कला-कौशल का विकास कर उसे अपने लिए अनुकूल बनायेगा। एवरेस्ट पर मानव का बार-बार सपुल प्रयास, चन्द्रमा की सतह पर उतरना, सुदूर नियंत्रण विधि (Remote Sensing) की विधि से उपग्रहों द्वारा भूतल एवं भूगर्भ के गम्य एवं अगभ्य प्रदेशों के विविध एवं बहुपयोगी संसाधनों की खोज प्रकृति पर उसकी विजय नहीं तो उसके सफल एवं बढ़ते हुए गतिशील प्रयास अवश्य कहे जायेंगे।

(v) उत्पादन के जिन साधनों पर मानव प्रत्यक्षत: प्रकृति पर निर्भर है उस पर परिवेश का प्रभाव महत्त्वपूर्ण तो है, जैसे कृषि एवं पशुपालन व्यवसाय में। परन्तु इस क्षेत्र में भी मानव ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। नई दुनिया की उपज को पुरानी दुनिया में एवं पुरानी दुनिया के पौधों एवं पशुओं को नई दुनिया में सफलतापूर्वक अपनाया गया है। आज जलवायु, मिट्टी, धरातल के परिवर्तन के साथ-साथ मानव ने प्रयोगशाला में अपने अथक प्रयास द्वारा नयी स्मिों एवं संकर किस्मों का विकास किया है। मिट्टी में विशेष प्रकार के खाद-बीज-कीटनाशी एवं जल व्यवस्था करके उसके गुणों में वांछित परिवर्तन किये गये हैं। ऊसड़ (कंकड़) एवं बीहड़ जमीन पर आज सफलतापूर्वक खेती जा रही है। मानव ने शुष्क प्रदेशों में कृत्रिम साधनों द्वारा जल लाकर वहाँ की प्राकृतिक एवं मानवीय व्यवस्था को बदल दिया है। जैसे भारत में इंदिरा गांधी नहर द्वारा राजस्थान के शुष्क प्रदेश में गेहूँ एवं चावल की खेती की जाती है। इसी भांति भारत में विश्व की सबसे कम दूध देनेवाली गरीब गायों की संख्या अब घट गई एवं नई किस्म की संकर गायों की नस्लें अधिक होने के कारण आज भारत का दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान हो गया है। क्या यह प्रतिकूल परिवेश में अनुकूलता लाने का सफल एवं सुन्दर उदाहरण नहीं है।

(vi) उद्योग-धंधों का विकास मानव की अपनी सफलता है। वह प्राकृतिक परिवेश से अधिक स्वयं मानव द्वारा अधिक नियंत्रित है। वस्त्र व्यवसाय के विविध प्रकार एवं कृत्रिम रेशे, प्लास्टिक एवं रासायनिक उद्योग इसके सुन्दर उदाहरण हैं। मानव द्वारा विकसित विद्युत धमन भट्टी ने विशिष्ट इस्पात उद्योग का स्वरूप ही बदल दिया है। जापान जैसे देश ने तो प्राकृतिक बाधाओं को अर्थात् वहाँ प्राकृतिक संसाधन न होते हुए भी दूसरे देश से कच्चा माल आयात कर अपने बाजार को विकसित किया है। इससे स्पष्ट होता है कि आज कई उद्योगों को कच्चे माल उत्पादक केन्गें व बाजार से भी दूर मानव अपनी सुविधा के अनुसार कहीं भी स्थापित कर सकता है। इतना ही नहीं, मानव ने उद्योगों के भीतरी प्रकोष्ठ में भी पर्याप्त अनुकूलता प्राप्त कर ली है।

(vii) आधुनिक नगरों का विकास मानव की विशिष्ट कृति का अनूठा उदाहरण है। यह निश्चयवादियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। यहाँ पर प्रत्यक्ष प्राकृतिक प्रभाव प्रायः लुप्त होता दिखायी देता है।

वर्खोयकस प्रदेश में भयंकर सर्दी से बचने हेतु एवं कुवैत, रियाद, सिंगापुर जैसे नगरों में भयंकर गर्मी से बचने हेतु सफल प्रयास किये गये हैं। नगरों में मानव निर्मित सभी प्रकार की अनुकूलताएँ पाई जाती हैं। इसी कारण वहाँ पर भौतिक परिवेश की प्रतिकूलता का प्रभाव भी तेजी से लुप्त होता जा रहा है।

विश्व के विभिन्न बड़े-बड़े शहरों में मार्ग, भवन, भूमिगत गटर एवं नाली व्यवस्था, व्यावसायिक स्थल मार्गों पर विभिन्नता रूपी व विविध उपयोगी वाहन, भवनों का विविध रूपी उपयोग एवं बड़े-बड़े व्यावसायिक काम्पलेक्स सभी मानव निर्मित हैं। सभी प्रकार के अन्वेषण, विकास, सुविधाएँ, विशेष उद्योग-धंधें, शोध संस्थान आदि नगरीय सभ्यता के निरन्तर विकास की पृष्ठभूमि में ही पुष्पित एवं पल्लवित होते रहते हें। अतः नियतिवाद में पूर्णतः नवीन मोड़ का श्रेय ऐसे ही विकास को है। सुविधाओं की खोज में मानव ने कठिनाईयों एवं दुश्चिन्ताओं को भी आमंत्रित किया, पर वह उनसे घबराया नहीं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज प्रकृतिवादियों द्वारा सोचा गया ऐसा विस्तृत एवं प्रच्छन्न क्षेत्र तेजी से सिकुड़ता जा रहा है जहाँ कि मानव या तो पूर्णतः प्राकृतिक परिवेश पर ही आश्रित रह रहा हो, या विकसित मानव के वहाँ पद-चिह्न नहीं पहुँच पाये हों। क्योंकि आज का मानव इस ब्रह्माण्ड के ध्रुव से आकाश तक, समुद्र तल से एवरेस्ट चोटी तक अपनी सफलता प्राप्त की है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानव कैसे निष्क्रिय प्राणी बनकर रह सकता है।

1.4 सम्भववाद (Possibilism)

ऊपर हमलोग देख चुके हैं कि नियतिवाद के समर्थक अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में एकपक्षीय व्याख्या की थी जिसको भूगोलवेत्ताओं ने नाकार दिया। विभिन्न देशों के भूगोलवेत्ताओं ने प्राकृतिक दशाओं के साथ-साथ मानवीय क्रिया विधि को प्रमुख या प्रभावशाली बताया है। ये सभी भूगोलवेत्ता मनुष्य की स्वतंत्र एवं सुरक्षा पर विशेष बल देते हुए 20वीं शताब्दी में एक नये विचारधारा को जन्म देकर भूगोल के क्षेत्र में एक नये विचारधारा की शुरूआत की जिसे सम्भववाद (Possibilism) विचारधारा कहा जाता है।

'सम्भववाद (Possibilism) शब्द का सबसे पहले प्रयोग करने का श्रेय फ्रेब्रे (Febvre) महोदय को जाता है। अतः उसे 'सम्भववाद' का जनक भी माना जाता है जिसे कई तत्कालिन फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता ने समर्थन किया जिसमें विडाल-डी-ब्लाश (Vidal de la Blache), ब्रून्ज (Brunhes) ईसा बोमेन (Isah Bowman), वाइजर (Biazer), किरचोफ (Kirchoff), कार्ल सॉवर (Carl Sawer), डिमांजिया (Demangeon), (Blenchard) जी टैथम (G. Tatham) इत्यादि मुख्य हैं। चूँकि इस विचारधारा का प्रतिपादन एवं विकास फ्रांस में हुआ था इसलिए इसे "French School of Geography (भूगोल की फ्रांसीसी विचारधारा) भी कहा जाता है। जहाँ तक सम्भववाद की परिभाषा का प्रश्न है अभी तक इसकी कोई वैज्ञानिक परिभाषा नहीं दी गई है। इस संबंध में सिर्फ धारणायें व्यक्त की गई हैं। संभववादी विचारधारा का सार, मानव और उसके पर्यावरण के बीच सम्बन्धों की समस्या को निम्न शब्दों में व्यक्त किया गयाहै : ''प्रकृति मानव को एक मार्ग के सहारे नहीं धकेलती है, बल्कि यह अनेक अवसर उपस्थित करती है जिनका चुनाव करने के